

## Crisis in Jamia Mali a University

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम अफजल (उत्तर प्रदेश) मोहतरम वाइसचेयर-मैन साहब, मैं एक बार फिर यहां जामिया मिलिया इस्लामिया का मसला आपके सामने पेश करना चाहता हूं। कई दिन पहले मैंने इस मसले को उठाया था और सरकार से दरखास्त की थी कि यह बहुत ग्रहम मसला है और 7 हजार स्टूडेंट्स का जो मुस्तकबिल है वह दांव पर लगा हुआ है। इसलिए सरकार इसमें फौरी तौर पर मुदाखलत करे और मामले को हल कराने की कोशिश करे। लेकिन अफसोस की बात यह है कि अभी तक इस पर कोई तवज्जह नहीं है और हालात दिन-ब-दिन खराब होते जा रहे हैं। मुझे अंधेसा है कि अगर हालात अगर हालात इसी तरह बने रहे, आज स्टूडेंट्स हंगर स्ट्राइक पर बैठ चुके हैं स्टाफ काउंसिल का रेजोल्यूशन भी पी. बी. सी. के खिलाफ आ चुका है और हालात दिन-ब-दिन खराब हो रहे हैं। मुझे डर है कि साल भी जाया हो जाएगा और वायलेंस का भी अंधेसा है।

मोहतरम, मैं आपको बताना चाहता हूं कि ये किस्सा सलमान रशदी की एक किताब के सिलसिले में "संडे" में जो एक आर्टिकल छपा उसमें मुख्तलिफ मुस्लिम लीडर्स के इंटरव्यू लिए गए और उसके अंदर जामिया के प्रो० वाईस चांसलर का एक इंटरव्यू छपा, जिसमें उन्होंने कहा कि सलमान रशदी की किताब से बैन हटा देना चाहिए, उसका कोई फायदा नहीं है। मैं समझता हूं कि हुकुमते हिंद की पालिसी थी, राजीव गांधी ने बैन लगाया था, कांग्रेस पार्टी ने बैन लगाया था और यह इस मुल्क में रहने वाले करोड़ों मुसलमानों के जजबात का मसला था और सारी दुनिया में रहने वाले मुसलमानों का मसला था।

अब जामिया, जो एक माइनोरिटी इंस्टीट्यूशन है, वहां सेकेंड इन कमांड पी०बी०सी० साहब अगर गैरजिम्मेदारी का सवत देते हैं तो मुझे यह देखकर बेहद अफसोस होता है। चूंकि मैं एक जर्नलिस्ट भी हूं, मुझे यह देखकर अफसोस होता है कि सारा नेशनल मीडिया, तमाम जर्नलिस्ट्स 7 हजार स्टूडेंट्स के पीछे हाथ धोकर पड़ गए कि यह डिमांड गलत है। मैं इसको कोई रिलीजियस मसला नहीं मानता। मैं इसको कोई सियासी मसला नहीं मानता लेकिन यह जरूर मानता हूं कि सियामत इसमें दाखिल है और जामिया को सियासत का अखाड़ा बनाने की कोशिश की जा रही है। मैं इसको रिलीजियस इसलिए नहीं मानता कि अगर किसी अखबार में एक ऐसा लेख छपता है जिससे किसी तबके के जजबात मजबूत होते हैं या कोई ऐसा लेख या कोई ऐसी स्पीच या कोई ऐसा स्टेटमेंट जो प्रोवोकेशन की तरफ ले जाता हो, उस पर कानून का इतलाक होना है। 153ए की दफा लगती है उसके ऊपर और उस पर मुकदमा चलाया जाता है।

जामिया के पी०बी०सी० ने एक स्टेटमेंट दिया। मैं उसकी मजहबी ग्रहमियत की बात नहीं कर रहा हूं कि वह सलमान रशदी की किताब के खिलाफ था, लोग उसको दूसरा रूप दे रहे हैं। मैं उसके कानूनी मुद्दे की तरफ जा रहा हूं कि पी. बी. सी. जैसे जिम्मेदार शक्श के स्टेटमेंट के नतीजे में जामिया के अंदर रिजेंटमेंट हुआ। सडकों ने स्ट्राइक की, एजिटेशन किया। एक प्रोफेसर की पिटाई हो गई। उनके बाद जामिया को बंद कर दिया गया और वहां वायलेंस का खतरा पैदा हो गया। उसके बाद जहाँ तक मुझे इत्मीन है, हुसूमन

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल]  
 रिसोर्स मिनिस्टर हैं थोड़ा डांट पिलाई  
 वाइस चांसलर को तो बिना जांच कराए  
 यूनिवर्सिटी को खोल दिया। मैं यहां पूरे  
 हो बताना चाहता हूं कि जो लोग फ्रीडम  
 आफ एक्सप्रेशन की बात करते हैं, फ्रीडम  
 आफ स्पीच की बात करते हैं और जिस  
 वाइस चांसलर और प्रो० वाइस चांसलर  
 के लिए हम सीना तान करके बात कर  
 रहे हैं वह इतना बुजदिल है कि जिस  
 दिन उन्होंने यूनिवर्सिटी खोली तो उस  
 दिन वाइस चांसलर, प्रो वाइस चांसलर  
 रजिस्ट्रार डिप्टी रजिस्ट्रार यहां तक कि  
 तमाम असिस्टेंट रजिस्ट्रार यूनिवर्सिटी  
 से गायब थे और आज चार, पांच, छह  
 दिन हो चुके हैं यूनिवर्सिटी खुली हुई है  
 लेकिन एक जिम्मेदार जो है यूनिवर्सिटी  
 में नहीं जाता। ऐसे बुझदिलों को खड़े  
 हो करके आप सपोर्ट करते हैं बहुत से  
 लोग। मुझे जर्म आती है कि आप फ्रीडम  
 आफ एक्सप्रेशन के नाम पर क्या गलतियों  
 को सपोर्ट करते हैं? मोहतरम, मैं बार बार  
 इस बात को कहा रहा हूं कि इसको  
 रिलीजस रंग देने की जरूरत नहीं है,  
 यह एक कानूनी मसला है। मैंने एक  
 बार पहले भी कहा कि यहां सड़क के  
 ऊपर एक रिसा वाला शराब पी लेता है  
 तो पुलिस वाले उसके हाथ पैर तोड़ देते  
 हैं, मैंने अपनी आंखों से देखा है। लेकिन  
 इसके बरक एक डिप्टी कमिश्नर आफ  
 पुलिस दिल्ली के अंदर शराब पी करके  
 जामा मसजिद के अंदर घुस गया और  
 आज तक उसके खिलाफ कोई कार्यवाही  
 नहीं हुई। इसका मतलब यह है कि  
 सिरफिरा आदमी कोई गलती करे तो  
 वह न माफी मांगेगा न उसके खिलाफ  
 कोई कार्यवाही होगी। अगर पी०बी०सी०  
 ने एक स्टेटमेंट दिया है और उससे

जजाबत भजकह हुए हैं और सबसे बड़ी  
 बात यह है कि एक यूनिवर्सिटी बंद हो  
 गई। 7 हजार स्टूडेंट्स का मस्तकबल  
 खतरे में पड़ गया। तो क्या यह है  
 कि पी०बी०सी० को तो खुद ही इखलाकी  
 तौर पर इस्तीफा दे देना चाहिए।

मोहतरम, मैं यह बताना चाहता हूं  
 कि मसला इतना सीधा नहीं है जितना  
 समझा जा रहा है। मैं इसकी बुनियाद  
 बताना चाहता हूं। आप लोग जानते हैं  
 कि अभी तीन ही महीने हुए हैं जामिया  
 के अंदर नए वाइस चांसलर आए। ये नए  
 वाइस चांसलर साहब जब आए तो यह  
 पहला धमाका हुआ जामिया वालों के लिए।  
 इसलिए हमारे मौलाना असद मदनी साहब जो  
 राज्य सभा के मੈम्बर हैं और वह तबज्जह  
 दिला चुके हैं कि जामिया के अंदर पहली  
 बार एक काजियामी को आपने वाइस  
 चांसलर बनाकर भेजा। अहमदिया फिरके  
 का आदमी जिसको हम मुसलमान नहीं  
 मानते, वह डिक्लेयर्ड कम्यूनिटी है, नान-  
 मुस्लिम की, उसको आपने बनाकर भेजा  
 मुसलमान के नाम पर। यह पहला धमाका  
 था जो आपने जामिया मिलिया को पहला  
 शॉक दिया। उसके बाद वाइस चांसलर  
 साहब के आने के बाद एक इंटरव्यू  
 मिला एक अखबार को और उसमें यह  
 दावा किया कि जामिया का कोई माइनो-  
 रिटी करेक्टर नहीं है। यह दूसरा शॉक  
 उन्होंने जामिया को पहुंचाया। उसके  
 बाद जब कुछ स्टूडेंट्स और कुछ मसाबदा  
 उनसे मिलने के लिए गए तो उन्होंने  
 यह कहा...

उपसभाध्यक्ष (श्री भास्कर अन्नाजी  
 भासोबकर) अब खत्म कीजिए ...

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ सीम अफजल :  
 बस मैं अभी खत्म कर रहा हूँ। तो उस  
 पर उन्होंने यह कहा कि जामिया के  
 कंस्टीट्यूशन में कहीं पर यह लिखा हुआ  
 है कि यहां वाइस चांसलर मुसलमान होगा।  
 कहीं लिखा हुआ है कि जामिया की जवान  
 उर्दू होगी। इस तरह की गुप्तगू अभी  
 तीन महीने नहीं हुए हैं हमारे वाइस  
 चांसलर साहब ने शुरू कर दी।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI  
 BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Afzalji,  
 please conclude.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ सीम अफजल :  
 इन तमाम बिन्दुओं के बाद जब प्रो  
 वाइस-चांसलर ने एक ऐसा बयान दिया  
 तो जो लावा अंदर ही अंदर पक  
 रहा था मोहतरम बहफूट गया इस मसले  
 को पी.वी.सी. से नहीं जोड़ना चाहिए।  
 इसमें वाइस चांसलर की गैर जिम्मेदारी  
 है। पूरे हाउस ने उस दिन कंडम  
 किया जब उन्होंने युनिवर्सिटी को बंद  
 किया। ऐसे हालात नहीं थे, पुरस्मान  
 एजिटेशन चल रहा था। बातचीत करते  
 अगर तो मसला हल हो जाता। लेकिन  
 उन्होंने युनिवर्सिटी बंद कर दी।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI  
 BHASKAR ANNAJI MASODKAR):

Please conclude now.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ सीम अफजल :  
 मैं आखिरी बात और कहना चाहता हूँ।  
 बहुत ज्यादा जनता दल के दो मंत्रान  
 के खिलाफ बहुत ज्यादा और मचा रहे हैं  
 कुछ लोग। आज इंडियन एक्सप्रेस में  
 पी.वी.सी. ने यह बयान दिया है कि  
 मैं और मोबेदुल्ला खान आजमी जामिया  
 में गए और हमने जाकर तकरीर की और  
 वहां लडकों को प्रवोक किया मैं इसका

डिनार्क करता हूँ और आपको बताना  
 चाहता हूँ कि उन्होंने यह भी लिखा कि  
 उन्होंने आकर मजहबी तकरीर की। मैं  
 आपको बताना चाहता हूँ कि सी. आई.  
 डी. से रिकार्ड मंगा लिया जाए। मैंने  
 कोई मजहबी तकरीर वहां नहीं की। मैंने  
 यह कहा कि अगर एक आम आदमी के  
 खिलाफ 153ए के तहत मुकदमा चल सकता  
 और मैंने टेलीफोन पर अर्जुनसिंह जी को भी  
 कहा कि अगर एक आम आदमी के  
 खिलाफ 153 ए के तहत मुकदमा चल  
 सकता है तो जामिया के पी.वी.सी.  
 के एक बयान के नतीजे में जो प्रोबंक्शन  
 हुआ है उसके नतीजे में उनके खिलाफ भी  
 मुकदमा चलना चाहिए। मैं इसको मजहबी  
 मामला नहीं बना रहा हूँ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI  
 BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please  
 conclude.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ सीम अफजल :  
 मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि मौलाना  
 आबेदुल्ला आजमी पर यह इलजाम लगाया  
 जा रहा है कि उन्होंने मजहबी स्पीच दे  
 करके वहां हालात को प्रवोक किया।  
 हकीकत यह है कि उन्होंने यह बताया  
 कि हुजूर सल्लानल्लाहो अले हे सबल्लम के  
 सिलसिले में मुसलमान बहुत संसदिब हैं  
 और उन्होंने इसकी कुछ भिसालें दी और  
 उसके बाद यह कहा कि मैं ये भिसाले  
 दे करके सरकार की यह बताना चाहता  
 हूँ कि यह बड़ा अहम मसला है इसको  
 इतना साइटसी न लें।

बल्कि संजीवनी के साथ इस मसले  
 को हल करें। आखिर में एक मशविरा  
 देना चाहता हूँ तलब इस वक्त स्ट्राइक  
 पर है, हंगर स्ट्राइक पर है, अन्टिल डेथ  
 पर है। यह बहुत सीरियस मीटर है  
 और कल पार्लियामेंट खत्म होने जा रही  
 है। मैं जानता हूँ कोई पूछने वाला नहीं  
 होगा यहां पर अगर जामिया में कुछ हो  
 गया तो। मैं सरकार से अपील करना  
 चाहता हूँ कि फौरन मदाखलत करे।  
 सलमान खुर्शीद साहब जो डिप्टी मिनिस्टर  
 हैं वह इस मसले में बीच में पड़े हुए हैं।

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल]

शाहबुद्दीन साहब भी हैं, पी. एम. सईद साहब भी हैं लेकिन मुझे लगता है सरकार का कोआपरेशन उनको नहीं मिल रहा है। इसलिए मजबूर होकर आज "कौमो आवाज" में सफा अल्वल पर सलमान खुशोद साहब का ई टरक्यू शायद हुआ है जो सरासर अर्जुन सिंह साहब के खिलाफ जाता है। इससे पता चलता है कि जामिया के मामले में कांग्रेस में इनफाइंटिप भी चल रही है। मैं आपसे अपील करता हूँ कि जामिया को सियासत का अखाड़ा न बनाया जाय। (व्यवधान) मेरी यह अर्ज है की फीरो तौर पर पी. बी. सी. को वहां से कहा जाए कि वह इस्तीफा दें और इस मामले को जल्दी से जल्दी हल किया जाए। (व्यवधान)

श्री محمد افضل عرف م۔ افضل: محترم وائس چیرمین صاحب۔ میں ایک بار پھر یہاں جامعہ ملیہ اسلامیہ کا مسئلہ آپ کے سامنے پیش کرنا چاہتا ہوں۔ کئی دن پہلے میں نے اس مسئلے کو اٹھایا تھا۔ اور سرکار سے درخواست کی تھی کہ یہ بہت اہم مسئلہ ہے۔ اور سات ہزار اسٹوڈنٹس کا جو مستقبل ہے وہ دائرہ پر لگتا ہوا ہے۔ اس لیے سرکار اس میں فوری طور پر مداخلت کرے اور معاملے کو حل کرانے کی کوشش کرے۔ لیکن افسوس کی بات یہ ہے کہ ابھی تک اس پر کوئی توجہ نہیں ہے اور حالات دن بہ دن خراب ہوتے جا رہے ہیں۔ مجھے اندیشہ ہے کہ اگر حالات اسی طرح بنے رہے تو۔ آج اسٹوڈنٹ ہنگر اسٹرائک پر بیٹھ چکے ہیں۔ اسٹاف کاؤنسل کا رزلوشن

† [Transliteration in Arabic Script]

بھی پی۔ وی۔ سی۔ کے خلاف آچکا ہے۔ اور حالات دن بہ دن خراب ہو رہے ہیں۔ مجھے ڈر ہے کہ سال بھی مناسخ ہو جائیگا اور وائٹنس کا بھی اندیشہ ہے۔

محترم۔ میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ یہ قلمہ سلمان رشدی کی ایک کتاب کے سلسلہ میں سنڈے میں جو ایک آرٹیکل چھپا اس میں مختلف مسلم لیڈرس کے انٹرویو لیے گئے اور اس کے اندر جامعہ ملیہ اسلامیہ کے پرووائس چانسلر کا ایک انٹرویو چھپا تھا جس میں انہوں نے کہا کہ سلمان رشدی کی کتاب سے بین شادینا چاہیے۔ اس کا کوئی فائدہ نہیں ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ حکومت ہند کی پالیسی تھی۔ راجیو گاندھی نے بین لگایا تھا۔ کانگریس پارٹی نے بین لگایا تھا اور یہ اس ملک میں رہنے والے کروڑوں مسلمانوں کے جذبات کا مسئلہ تھا۔ اور ساری دنیا میں رہنے والے مسلمانوں کا مسئلہ تھا۔

اب جامعہ۔ جو ایک مائنارٹی کا انسٹی ٹیوشن ہے۔ وہاں سیکنڈ ان کمانڈر پی۔ وی۔ سی۔ صاحب اگر غیر ذمہ داری کا ثبوت دیتے ہیں تو مجھے یہ دیکھ کر بے حد افسوس ہوتا ہے۔ چونکہ میں ایک جرنلسٹ بھی

ہوں۔ مجھے یہ دیکھ کر افسوس ہوتا ہے کہ سارا نیشنل میڈیا۔ تمام جرنلسٹ سات ہزار اسٹوڈنٹس کے پیچھے ہاتھ دھوکہ پڑ گئے کہ یہ ڈمانڈ غلط ہے۔ میں اس کو کوئی ریجیسٹر مسئلہ نہیں مانتا۔ میں اس کو کوئی سیاسی مسئلہ نہیں مانتا۔ لیکن یہ ضرور مانتا ہوں کہ سیاست اس میں داخل ہے۔ اور جامعہ کو سیاست کا اکھاڑہ بنانے کی کوشش کی جارہی ہے۔ میں اس کو ریجیسٹر اس لیے نہیں مانتا کہ اگر کسی اخبار میں ایک ایسا لیکچر چھپتا ہے جس سے کسی طبقے کے جذبات مجروح ہوتے ہیں۔ یا کوئی ایسا لیکچر ایسی اسپیکر یا کوئی ایسی اسٹیٹمنٹ جو پرو وکیشن کی طرف لے جاتا ہو۔ اس پر قانون کا اطلاق ہوتا ہے۔ ۱۱۵۳ء کی دفعہ لگتی ہے۔ اس کے اوپر اور اس پر مقدمہ چلایا جاتا ہے۔

جامعہ کے پی۔ ڈی۔ سی۔ نے ایک اسٹیٹمنٹ دیا۔ میں اس کی مذہبی اہمیت کی بات نہیں کر رہا ہوں کہ وہ سلمان رشدی کی کتاب کے خلاف تھا۔ لوگ اس کو دوسرا روپ دے رہے ہیں۔ میں اسکے قانونی نکتے کی طرف جا رہا ہوں۔ کہ پی۔ ڈی۔ سی۔ جیسے ذمہ دار شخص کے اسٹیٹمنٹ کے نتیجے میں جامعہ کے اندر رجمنٹ ہوا۔ لوگوں نے اسٹراٹیک کی۔ ایجنٹیشن کیا۔ ایک

پروفیسر کی پٹائی ہو گئی۔ اس کے بعد جامعہ کو بند کر دیا گیا۔ اور وہاں وائلینس کا خطرہ پیدا ہو گیا۔ اس کے بعد جہاں تک مجھے علم ہے۔ جیو میں رسورسز منسٹر نے تھوڑی ڈانٹ پلائی وائس چانسلر کو۔ تو بنا جانچ کر اسے یونیورسٹی کو کھول دیا۔ میں یہاں پورے ہاؤس کو بتانا چاہتا ہوں کہ جو لوگ فریڈم آف ایکسپریشن کی بات کرتے ہیں۔ فریڈم آف اسپیکر کی بات کرتے ہیں اور جس وائس چانسلر اور پرو وائس چانسلر کے لیے ہم سینہ تلان کر کے بات کر رہے ہیں۔ وہ اتنا بزدل ہے کہ جس دن انہوں نے یونیورسٹی کھولی تو اس دن وائس چانسلر۔ پرو وائس چانسلر۔ رجسٹرار۔ ڈپٹی رجسٹرار یہاں تک کہ تمام اسٹنٹ رجسٹرار یونیورسٹی سے غائب تھے۔ اور آج جلد۔ پانچ۔ چھ دن ہو چکے ہیں۔ یونیورسٹی کھلی ہوئی ہے۔ لیکن ایک ذمہ دار جو ہے۔ یونیورسٹی میں نہیں جاتا۔ ایسے بزدلوں کو کھڑے ہو کر کے آپ سپورٹ کرتے ہیں بہت سے لوگ۔ مجھے شرم آتی ہے۔ کہ آپ فریڈم آف ایکسپریشن کے نام پر کیا گالیوں کو سپورٹ کریں گے۔ محترم۔ میں بار بار اس بات کو کہہ رہا ہوں کہ اسکو ریجیسٹرنگ

دینے کی ضرورت نہیں ہے۔ یہ ایک قانونی مسئلہ ہے۔ میں نے ایک بار پہلے بھی کہا کہ یہاں سڑک کے اوپر ایک رکشہ والا شراب پی لیتا ہے۔ تو پولیس والے اس کے ہاتھ پیر توڑ دیتے ہیں۔ میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے لیکن اس کے برعکس ایک ڈیٹی کشن آف پولیس شراب پی کر کے جامع مسجد کے اندر گھس گیا اور آج تک اس کے خلاف کوئی کارروائی نہیں ہوئی اس کا مطلب یہ ہے کہ سر پھر آدمی کوئی غلطی کرے گا تو وہ نہ معافی مانگے گا نہ اس کے خلاف کوئی کارروائی ہوگی۔ اگر پی۔ وی۔ سی۔ نے ایک اسٹیمٹ دی ہے اور اس سے جذبات مجروح ہوئے ہیں۔ اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ ایک یونیورسٹی بند ہوگی۔ سلت چار اسٹوڈنٹس کا مستقبل خطرے میں پڑ گیا۔ تو کیا وجہ ہے کہ پی۔ وی۔ سی۔ کو تو خود ہی اخلاقی طور پر استعفیٰ دینا چاہیے۔

محترم۔ میں یہ بتانا چاہتا ہوں کہ مسئلہ اتنا سیدھا نہیں ہے جتنا سمجھا جا رہا ہے۔ میں اس کی بنیاد بتانا چاہتا ہوں۔ آپ لوگ جانتے ہیں کہ ابھی تین ہی جینے ہوئے ہیں۔ جامعہ کے اندر نئے وائس چانسلر گئے ہیں۔ یہ نئے وائس چانسلر صاحب جب آئے تو یہ پہلا دھماکہ تھا جامعہ والوں کے لیے۔ اس لیے ہمارے مولانا اسعد مدنی صاحب جو راجہ سبھا کے ممبر ہیں وہ

توجہ دلا چکے ہیں کہ جامعہ کے اندر پہلی بار ایک قادیانی کو اپنے وائس چانسلر بنا کر بھیجا۔ احمدیہ فرقہ کا آدمی جسکو ہم مسلمان نہیں مانتے۔ وہ ڈکلیئرڈ کمیونٹی ہے۔ نان مسلم کی۔ اس کو آپ نے بنا کر بھیجا۔ مسلمان کے نام پر۔ یہ پہلا دھماکہ تھا آپ نے جامعہ ملیہ کو پہلا شاک دیا۔ اس کے بعد وائس چانسلر صاحب کے آنے کے بعد ایک انٹرویو ملا ایک اخبار کو اور اس میں یہ دعویٰ کیا کہ جامعہ کا کوئی مانتاری ٹیریکٹر نہیں ہے۔ یہ دوسرا شاک انہوں نے جامعہ کو پہنچایا۔ اس کے بعد جب کچھ اسٹوڈنٹس اور کچھ اساتذہ ان سے ملنے گئے تو انہوں نے یہ کہا...

अपसमाधयत श्री सन्तानो मारुत  
मासोवकर : आप खतम कीजिए...

بس میں ابی حتم کرو رہا ہوں۔ تو اس

† [अधुनी महेश्वर अक्षर मरुत - अक्षर]

پر نہ ہوں نے یہ کہا کہ جامعہ کے کاسٹی ٹیوشن میں کہاں پر یہ لکھا ہوا ہے کہ یہاں کا وائس چانسلر مسلمان ہو گا کہیں لکھا ہوا ہے کہ جامعہ کی زبان اردو ہوگی۔ اس طرح کی گفتگو ابھی تین جینے نہیں ہوئے ہیں ہمارے وائس چانسلر صاحب نے شروع کر دی... "مداخلت"...

ان تمام چیزوں کے بعد جب

† [अधुनी महेश्वर अक्षर मरुत - अक्षर]

ووائس چانسلر نے ایک ایسا بیان دیا۔  
جو لاوا اندر رہی اندر پک رہا تھا محترم  
پھوٹ گیا۔ اس مسئلے کو پی۔ وی۔ سی۔  
نے نہیں جوڑنا چاہیے۔ اس میں وائس  
چانسلر کی غیر ذمہ داری ہے پورے ہاؤس  
نے اس دن کنڈیم کیا جب انہوں نے  
یونیورسٹی کو بند کیا۔ ایسے حالات نہیں تھے۔  
وائس چانسلر نے چل رہا تھا۔ بات چیت  
رہے اگر تو مسئلہ حل ہو جاتا۔ لیکن انہوں  
نے یونیورسٹی بند کر دی۔... مداخلت...

† [اے ایم ایف ایف ایف م۔ ایف:]

میں آخری بات اور کہنا چاہتا ہوں۔  
بہت زیادہ جتنا دل کے دو ممبران کے  
مخلاف بہت زیادہ شور مچا رہے ہیں کچھ  
لوگ۔ آج انڈین ایکسپریس میں پی۔ وی۔  
سی۔ نے یہ بیان دیا ہے کہ میں اور عبداللہ  
اعظمی جامعہ گئے۔ اور ہم نے جا کر تقریر کی  
اور وہاں لوگوں کو پرووک کیا۔ میں اسکا  
تکرتا ہوں۔ اور آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ  
انہوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ انہوں نے  
اگر نہ ہی تقریر کی۔ میں آپ کو بتانا چاہتا  
ہوں کہ سی۔ آئی۔ ڈی سے ریکارڈ مانگ  
لیا جائے۔ میں نے کوئی مذہبی تقریر وہاں  
نہیں کی۔ میں نے یہ کہا کہ اگر ایک عام آدمی  
کے خلاف ۱۵۳ اے کے تحت مقدمہ چل  
سکتا ہے۔ اور میں نے ٹیلیفون پر ارجن سٹوکی

کو بھی کہا کہ اگر ایک عام آدمی کے خلاف ۱۵۳  
اے کے تحت مقدمہ چل سکتا ہے۔ تو جامعہ  
کے پی۔ وی۔ سی۔ کے ایک بیان کے نتیجے  
میں جو پرووکیشن ہو رہے اس کے نتیجے میں  
ان کے خلاف بھی مقدمہ چلنا چاہیے۔ میں  
اسکو مذہبی مسئلہ نہیں بنانا چاہتا ہوں مداخلت

† [اے ایم ایف ایف ایف م۔ ایف:]

میں یہ بھی بتانا چاہتا ہوں کہ مولانا عبید  
خان اعظمی پر یہ الزام لگایا جا رہا ہے کہ  
انہوں نے مذہبی اسپینچ دیکر کے وہاں کے  
حالات کو پرووک کیا۔ حقیقت یہ ہے کہ  
انہوں نے یہ بتایا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم  
کے سلسلہ میں مسلمان بہت سینسیو  
ہے۔ اور انہوں نے اسکو کچھ مثالیں دیں  
اور اس کے بعد یہ کہا کہ میں یہ مثالیں دیکر  
کے سرکار کو یہ بتانا چاہتا ہوں کہ یہ بڑا اہم  
مسئلہ ہے اسکو اتنا لائٹلی نہ دیں۔ بلکہ  
سنجیدگی کے ساتھ اس مسئلے کو حل کریں۔  
آخر میں ایک مشورہ دینا چاہتا ہوں کہ  
طلباء اس وقت اسٹرائک پر ہیں ہنگامہ  
پر ہیں۔ انشل ڈیٹھ پر ہیں۔ یہ بہت سیریس  
میٹر ہے۔ اور کل پارلیمنٹ ختم ہونے  
جاری ہے۔ میں جانتا ہوں کہ کوئی پوچھنے  
والا نہیں ہو گا یہاں۔ اگر جامعہ میں کچھ  
ہو گیا۔ تو میں سرکار سے اپیل کرنا چاہتا ہوں  
کہ فوراً مداخلت کرے۔ سلمان خورشید صاحب





سلمان رشدی کی کتاب شیطان کی آیات کے ایکسپورٹ پر آنجنائی ایکس وزیراعظم جناب راجیو گاندھی نے بندش لگائی تھی یہ ایک فتنہ تھا۔ ہندوستان کی دھرتی پر فتنے کیا کم ہیں کہ جو نئے نئے فتنے پیدا کئے جارہے ہیں۔ ہمارے پاس اس منحوس کتاب پر سے بندش ہٹانے کی رائے دینے والوں کے ذریعے سے سلمان رشدی نے بھارت کی دھرتی کو ایک بار پھر میں جنگ کے طور پر منتخب کر لیا ہے۔ جامعہ ملیہ اسلامیہ میں جو حادثہ پیش آیا ہے۔ وہ بھی اس سلسلہ کی ایک کڑی ہے۔ یہ ثابت ہو گیا ہے کہ رشدی کے اس بحثیول نے اپنے منصوبہ بند پروگراموں کا آغاز جامعہ ملیہ اسلامیہ میں پروفیسر پرو داکس چانسلمیرٹس کے ذریعہ کر دیا ہے۔ ایسے فتنہ کار آدمی کو پروفیسر پرو داکس چانسلمیرٹس کی جگہ سے ہٹایا جائے۔ اس نے جامعہ ملیہ اسلامیہ میں سلگتا ہوا ماحول پیدا کر دیا ہے "مداخلت" اس پر پورا پورا دھیان دینا چاہیے۔ ورنہ امن و امان کا ماحول غارت ہو جائے گا۔ بچوں کا مستقبل تباہ و برباد ہو جائے گا۔

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: ایک بی۔ وی۔ سی۔ کو بچانے کے لیے ہزار اسٹوڈنٹس کا پورا مستقبل داؤ پر لگا رکھا ہے یہ کیا طریقہ ہے مداخلت

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal) : Sir, it is a very serious and sensitive issue. The agitation has been continuing for a long time. Now it should stop. My friend, Mr. Afzal, has demanded that the Pro-Vice-Chancellor should resign. Sir, the incident started when this opinion came out in the newspapers. He has already said that. He has expressed his opinion. Sir, 45 intellectuals in Iran have openly said that the Fatwa on Salmaan Rushdee should be withdrawn by the Government. The same opinion is expressed by a number of intellectuals in Egypt also. Now one intellectual in India has expressed the opinion that ban. (Interruptions).

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: یہ بدھی وادی بدھ وادی مچھلی مچھلی میں کتوں، اینٹرفیئر کر رہے ہیں۔ مسلمان پرسنل ان میں انہیں بدھ وادیوں نے اینٹرفیئر کر کے پورے ملک کو تباہ و برباد کر دیا ہے (بے باک)

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: یہ بدھی وادی بدھ وادی میں کتوں اینٹرفیئر کر رہے ہیں۔ مسلمان پرسنل لائیں اپنی بدھی وادیوں نے اینٹرفیئر کر کے پورے ملک کو تباہ و برباد کر دیا ہے۔ "مداخلت"

SHRI SUKOMAL SEN: Sir, they have said that it is not a communal or religious issue. I also consider that it is not a communal or religious issue. One intellectual has expressed his opinion. He has the right to express his opinion under the Indian Constitution. (Interruptions). He has expressed his apologies also... (Interruptions).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Please sit down. Nothing will go on record.

SHRI SUKOMAL SEN: \*

TIE VICE-CHAIRMAN (SHRI BHASKAR ANNAJI MASODKAR): Mr. Sen, nothing is going on record. (Interruptions) — Please take your seat. (Interruptions). I have already called Mr. Rahman. (Interruptions). Nothing is going on record. Please resume your seat, (Interruptions).

श्री मोहम्मद खलील रहमान :  
(आन्ध्र प्रदेश) : जनाब, वाइस-चेयरमैन साहब, जो स्पेशल मेशन मोम अफजल साहब ने किया है उसकी मैं भरपूर तारीफ करता हूँ। इस वजह से कि जामिया मिलिया का जो मसला है वह इतिहाई हस्सा और नाजुक मसला है। जैसा कहा गया है, सात हजार तलबा के मुस्तकविल का दारोमदार उस तदरिस् इशारे में है जो हिन्दुस्तान का कीमती असासा है। इस लिहाज से मैं हुकूमते हिन्द से इश्तिास्त करूँ कि उस मसले को और बढ़ने देने के बजाय जल्दी से जल्दी हल करे। मुझे यह कहते हुए फक महसूस हो रहा है कि सलमान रणदी की किताब पर जो सबसे पहले इस्तना आयद किया गया वह हुकूमते हिन्द की तरफ से किया गया। मगर इसके बावजूद वहाँ पर इतना हंगामा हो रहा है तो हुकूमते हिन्द की तरफ से खामोशी की वजह क्या है, यह मेरी समझ में नहीं आता है। मैं हुकूमते हिन्द से दखिस्त करूँगा कि वह सबसे पहले अपनी अव्वलतीन फुरसत में उस पर तवज्जह करे और वहाँ पर इतिहाई आम हालत पैदा करे ताकि फिरसे दरसो तादरीस शुरू हो सके।

\*[] Transliteration in Arabic script.

شری محمد خلیل الرحمن : آندھرا پردیش :  
جناب وائس چیرمین صاحب، جو اسپیشل  
میشن م۔ افضل صاحب نے کہا ہے۔ میں  
اس کی بھرپور تائید کرتا ہوں۔ اس وجہ سے  
کہ جامعہ ملیہ کا جو مسئلہ ہے وہ انتہائی حساس  
اور نازک مسئلہ ہے۔ جیسا کہ کہا گیا ہے۔  
سات ہزار طلباء کے مستقبل کا دار و مدار اس  
تدْرِیس ادارے سے ہے جو ہندوستان کا  
قیمتی اثاثہ ہے۔ اس لحاظ سے میں حکومت ہند  
سے درخواست کروں گا کہ اس مسئلے کو اور  
بڑھنے دینے کے بجائے جلدی سے جلدی  
حل کرے۔ مجھے یہ کہتے ہوئے فخر محسوس  
ہو رہا ہے کہ سلمان رندی کی کتاب پر جو  
سب سے پہلے امتناع عائد کیا گیا وہ حکومت ہند  
کی طرف سے کیا گیا۔ مگر اس کے باوجود وہاں  
پر اتنا ہنگامہ ہو رہا ہے۔ تو حکومت ہند  
کی خاموشی کی وجہ کیا ہے۔ یہ میری سمجھ میں  
نہیں آتا ہے۔ میں حکومت ہند سے درخواست  
کروں گا کہ وہ سب سے پہلے اپنی اولین  
فرصت میں اس پر توجہ کرے اور وہاں  
انتہائی عام ماحول پیدا کرے تاکہ پھر سے  
درس و تدْرِیس شروع ہو سکے۔

श्री सूरेंद्रजीत सिंह अहलूवालिया  
(बिहार) : उभसभाध्यक्ष महोदय, मोम  
अफजल साहब ने जो स्पेशल मेशन किया है

”اسکے ساتھ میں سہمات ہوتے ہوئے کچھ شہدوں میں آپنی بات رکھنا چاہتا ہوں۔ سرکار کے سامنے، میں آپکے ماتھم سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ جانییا میلیا ویشوویڈیالہ ایک مائیوریٹی کا ویشوویڈیالہ ہے۔ اس کے ریکٹر کو مینٹن کرنے کے لیے وہاں ایک مائیوریٹی کا وائس-چانسلر اور ایک پرو وائس چانسلر رکھا جاتا ہے۔ اس لیے پرو-وائس چانسلر اور وائس-چانسلر ایسے ہونے چاہیے جو مائیوریٹی کے ہکوں اور ان کے ایموشنس کا خیال رکھ سکیں۔ لیکن ایسا پرو-وائس چانسلر آج تک اس کرسی میں کبھی بیٹھا ہوا ہے، یہ میرا پرچہ ہے جو مائیوریٹی کے ایموشنس کو نہیں سمجھتا ہے، انکی باتناہوں سے پریشان نہیں ہے، انکی باتناہوں کے ساتھ خیلواڈ کرنے کی کوشش کر رہا ہے، وہ وہاں پر کبھی بیٹھا ہے؟ سلمان رشاہی نے جو کیتاب لکھی ہے وہ بہت بہتہ کی کیتاب ہے اور اس بہتہ کی کو دیکھتے ہوئے भारत سرکار نے اس پر پابندی لگائی ہے، راجیو گاندھی جی نے پابندی لگائی۔ اس پابندی لگی ہوئی کیتاب کو ٹیک کہنے والا پرو-وائس چانسلر کسے اس کرسی پر بیٹھا ہے، اسکو سرکار کبھی بدیش کر رہی ہے، یہ میں جاننا چاہتا ہوں۔ میں آپکے ماتھم سے یہ مانگ کرتا ہوں کہ اس پرو-وائس چانسلر کو وہاں سے نکالا جائے اور وہاں پر امن اور چین کاظم کیا جائے۔

”آئی شہزاد احمد ساریریا : میں افجیل ساہب نے جو سپیشل مینشن کیا ہے اور جن مٹالہ کا اڈھار کیا ہے اور اڈھار والیا جی نے جو کچھ کہا ہے اس کے ساتھ میں بھی اپنے آپ ایسوسیٹ کرتا ہوں۔

شری شبیر احمد ساریریا : میں افضل صاحب نے جو اسپیشل مینشن کیا ہے اور جن مٹالہ کا اڈھار کیا ہے اور اڈھار والیا جی نے جو کچھ کہا ہے اس کے ساتھ میں بھی اپنے آپ ایسوسیٹ کرتا ہوں۔

”آئی شہزاد احمد ساریریا (کرنٹیک) : میں بھی اس کے ساتھ اپنے آپ کو ایسوسیٹ کرتے ہوئے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس سٹیویشن کو گورنمنٹ نے بڑھا دیا ہے۔ وہ مسئلہ بالکل آئز ہو رہا ہے۔ اسکو کنٹرول کرنے کا کام اسکا تھا۔ سات ہزار بچوں کے مستقبل کا سوال ہے۔ وہ مستقبل ہم سب کو عزیز ہے۔

شری عبدالصمد لقی وکرناٹک : میں بھی اس کے ساتھ اپنے آپ کو ایسوسیٹ کرتے ہوئے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس سٹیویشن کو گورنمنٹ نے بڑھا دیا ہے۔ وہ مسئلہ بالکل آئز ہو رہا ہے۔ اسکو کنٹرول کرنے کا کام اسکا تھا۔ سات ہزار بچوں کے مستقبل کا سوال ہے۔ وہ مستقبل ہم سب کو عزیز ہے۔

آئی بکس ”اٹھارہ“ (اٹھارہ) : جانا، یہاں پر بڈھیاہ اور گار-بڈھیاہ، مچھہ اور کوم کی بات کی جا رہی ہے۔ لیکن لوگوں کو مچھہ اور کوم کا فرق سمجھنا نہیں ہوتا ہے تو کیا کیا جائے۔ یہاں تو نیشن کی بات ہے، ایک نیشن کے بڈھیاہ کی بات ہے جسکو تباہ کیا جا رہا ہے۔ جو کچھ اڈھار والیا جی نے اور میں افجیل جی اور ہمارے دوستوں نے کہا ہے، ٹیک کہا ہے، بیکول پرو-وائس چانسلر اور وائس-چانسلر کو وہاں سے نکالا جانا چاہیے اور اس بڈھیاہ کو بچانا چاہیے، اس لیے کہ اس بڈھیاہ سے ہمارے ملک کا ایک تاوناک مستکبیل وابستا ہے۔ اگر وہ بڈھیاہ اسی طرح سے تباہ ہو گیا اور لڑکے اسی تانہ سے ہنگر سٹراک پر بیٹ گئے تو کون پڑے گا اور کون پڑے گا۔ میں کہتا ہوں کہ ایک بار میں افجیل جی کے اس سپیشل مینشن کی دل سے تارید کرتے ہوئے یہ کہنا میں چاہتا ہوں کہ ہکومت جلدی سے جلدی قدم اڈاے۔

[श्री वकल उत्साहो]

वरना कल तक सेशन है, उसके बाद कोई  
पूछने नहीं जाएगा।

شری بیکل "آساہی" اتر پردیش:

جناب یہاں پر بدھی واد اور غیر بدھی واد  
نذہب اور قوم کی بات کی جا رہی ہے۔ لیکن  
لوگوں کو نذہب اور قوم کا فرق محسوس  
نہیں ہوتا ہے۔ تو کیا کیا جائے۔ یہاں تو  
نیشن کی بات ہے۔ ایک نیشن کے بڑے  
ادارے کی بات ہے جس کو تباہ کیا جا رہا  
ہے۔ جو کچھ اہلو دلیہ جی نے اور م۔ افضل

صاحب نے اور ہمارے دوستوں نے  
کہا ہے۔ ٹھیک کہا ہے۔ بالکل پرو وائس  
چانسلر اور وائس چانسلر کو وہاں سے نکالا  
جانا چاہیے۔ اور اس ادارے کو بچانا چاہیے۔  
اس لیے کہ اس ادارے سے ہمارے ملک کا

کس تا بناک مستقبل وابستہ ہے۔ اگر وہ  
ادارہ اسی طرح سے تباہ ہو گیا اور لڑکے  
اسی طرح ہنگامہ انگ بر بیٹھ گئے تو کون  
بڑے کتا اور کون بڑھائے گا۔ میں بھر  
ایک بار م۔ افضل جی کے اس پینشن مینشن  
کی دل سے تائید کرتے ہوئے یہ کہنا  
چاہتا ہوں کہ حکومت جلدی سے جلدی  
قدم اٹھائے ورنہ کل تک سیشن  
ہے۔ اس کے بعد کوئی پوچھنے  
نہیں جائے گا۔

Need to formulate a uniform policy on  
Sales Tax and Trade Licence of Poppy  
Husk in all Opium-producing States

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश): माननीय  
उपसभाध्यक्ष जी, मैं आप का अभारी हूँ  
जो आपने मुझे एक जर्बंदस्त जवाब  
को उजागर करने के लिए विशेष उल्लेख  
के माध्यम से बोलने का मौका दिया।

मान्यवर, देश में अफीम की खेती  
पर शतप्रतिशत केंद्रीय सरकार का नियंत्रण  
है। किन्तु केंद्रीय सरकार अफीम के पौधे  
के भूसे को और उसके डोडे के चरे  
जिसको पाँपी हस्क कहते हैं अपने नियंत्रण  
में न रख कर प्रांतीय सरकार के नियंत्रण  
में दे बैठी है। हर प्रादेशिक सरकार  
ने पाँपी हस्क के बारे में अलग-अलग  
तरह का टैक्स लगा रखा है।  
मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर  
प्रदेश भारत के मुख्य अफीम उत्पादक  
प्रांत हैं। तीनों जगह भाजपा की सरकारें  
हैं। इस उत्पादन का बहुत बड़ा दुरुप-  
योग मध्य प्रदेश की सरकार ने किया है।  
चूंकि मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री मूलतः  
मंदसौर जिले के निवासी हैं, इसलिए वे  
अलिभार्ति जानते हैं कि पाँपी हस्क का  
व्यापार किस तरह किया जाये या  
करवाया जाये।

मध्य प्रदेश शासन ने पहले तो पाँपी  
हस्क पर विक्रय कर 12 प्रतिशत से  
कम करके 4 प्रतिशत कर दिया।  
इससे कुछ विशेष व्यापारी लाभान्वित हुए।  
इन्हें लाइसेंस देते समय राभ्य सरकार ने  
विशेष कृपा की। इस वर्ष लाइसेंस फीम  
ही 25 हजार रुपये करके सारे पाँपी  
हस्क व्यापार को कुल मिला कर 5-7  
व्यापारियों के सिंडीकेट को सौंप दिया  
गया है। जनचर्चा है कि इस सिंडीकेट  
को मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री का सर्वज्ञात  
राजनैतिक, प्रशासनिक और निजी समर्थन  
प्राप्त है। इसको लोग पट्टा सिंडीकेट  
के नाम से भी जानते हैं। इससे भावों  
की प्रतिस्पर्धा अत्यन्त कम हो गई है।  
परिणामस्वरूप मध्य प्रदेश शासन को पांच  
करोड़ राजस्थान सरकार को 2.50 करोड़  
का मुकसान हो रहा है। आज देश के